अथ[1] विभक्त्यर्थाः

प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा[2] २ । ३ । ४६ ॥

नियतोपस्थितिकः[3] प्रातिपदिकार्थः । मात्रशब्दस्य[4] प्रत्येकं योगः प्रातिपदिकार्थमात्रे लिङ्गमात्राद्याधिक्ये[5] परिमाणमात्रे संख्यामात्रे च प्रथमा

१–'स्वौजसमौट्—' इति विहितस्वादीनां जिज्ञासितार्थनिरूपणायाह—अथेति ॥ २–प्रातिपदिकार्थश्च लिङ्गं च परिमाणं च वचनं च तानि प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनानि, तान्येव तन्मात्रम्, तस्मिन्, इति विग्रहः, अत्र वचनशब्दान्ते द्वन्द्वे कृते मात्रान्तरयोर्नित्यसमासवचनं क्लीबत्वं चेति मयूरव्यंसकादयश्चेत्येतदन्तर्गणसूत्रेण समासः ॥ ३–पदसमुदायरूपवाक्यार्थज्ञाने पदार्थज्ञानं कारणमित्यत आह—नियतेति। यस्मिन् प्रातिपदिके उच्चारिते सति यस्यार्थस्य नियमेन भानं स प्रातिपदिकार्थः। तन्मात्रे प्रथमा इत्यर्थः। यथा 'उच्चैः' इत्युच्चारिते उच्चाधिकरणस्य 'नीचैः' इत्युच्चारितेऽधोऽधिकरणस्य 'कृष्णः' इत्यत्र पुंस्त्वविशिष्टवासुदेवरूपार्थस्य 'श्रीः' इत्यत्र स्त्रीत्वविशिष्टलक्ष्मीरूपार्थस्य 'ज्ञानम्' इत्यत्र क्लीबत्वविशिष्टान्तर्बोधस्य च भानात्तेऽर्था नियतोपस्थितिकाः। तत्रार्थे 'उच्चैस्' इत्यादिशब्दात् प्रथमा ॥ ४–'द्वन्द्वादौ द्वन्द्वान्ते च श्रूयमाणं पदं प्रत्येकमभिसम्बध्यते' इति वचनात् ॥ ५–यद्यपि लिङ्गमात्र एवार्थ उचितस्तथापि प्रातिपदिकार्थभानं विना लिङ्गमात्रार्थभानासम्भवात् 'तदाधिक्ये' इत्युक्तम्। एवं च प्रातिपदिकार्थापेक्षया यत्र लिङ्गलिङ्गत्वे अधिके भासेते तत्रापि प्रथमा, न तु तत्र ताभ्यामधिके कर्मत्वादावित्यर्थः। अस्योदाहरणं तटः, तटी, तटमिति, इदमत्रावधारणीयम्; त्रिविधा नाम शब्दा अलिङ्गा नियतलिङ्गा अनियतलिङ्गाश्च। तत्राद्या द्वितये प्रातिपदिकार्थमात्रस्योदाहरणानि तृतीया लिङ्गमात्राद्याधिक्यस्य। अनियतलिङ्गेषु प्रातिपदिकमात्रेण कस्यापि लिङ्गस्य नियमेनाभानात् तेषु प्रथमार्थं लिङ्गग्रहणम् ॥

Scanned with CamScanner

स्यात्। प्रातिपदिकार्थमात्रे—उच्चैः। नीचैः। कृष्णः। श्रीः। ज्ञानम्। लिङ्गमात्रे—तटः, तटी, तटम्। परि[1]माणमात्रे—द्रोणो व्रीहिः। [2]वचनं संख्या। एकः, द्वौ, बहवः॥

सम्बोधने च २। ३। ४७॥

प्रथमा स्यात्। हे राम!

इति प्रथमा।

कर्तुरीप्सिततमं कर्म १। ४। ४९॥

कर्तुः क्रियया आप्तुमिष्टतमं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात्॥

कर्मणि द्वितीया २। ३। २॥

अनुक्ते कर्मणि द्वितीया स्यात्। [3]हरिं भजति। [4]अभिहिते तु कर्मादौ प्रथमा—हरिः सेव्यते। लक्ष्म्या सेवितः॥

अकथितं च १। ४। ५१॥

[5]अपादानादिविशेषैरविवक्षितं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात्।

[6]दुह्याच्पच्दण्ड्रुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथ्मुषाम्।

१-द्रोणशब्दात्परिमाणविशेषस्य नियमेनोपस्थितावपि व्रीहिणा सह प्रथमार्थस्य भेदान्वयलाभाय परिमाणग्रहणम्॥ २-एकत्वादीनां प्रकृत्या उक्तत्वात् 'उक्तार्थानामप्रयोगः' इति न्यायेन प्रथमा न स्यादतो वचनग्रहणम्॥ ३-अत्र चैत्रः कर्ता तद्वृत्तिः क्रिया प्रीत्यनुकूलव्यापाररूपा तया क्रियया आप्तुं संबन्धुमिष्टतमम् इच्छोद्देश्यं हरिपदार्थरूपं कारकं तस्य कर्मसंज्ञा। मद्वृत्तिव्यापारजन्यप्रीतिरूपफलाश्रयो हरिर्भवतु-ईदृशेच्छोद्देश्यत्वं हरिपदार्थस्य। एवं ग्रामः संयोगाश्रयो भवतु। तण्डुलः विक्लित्त्याश्रयो भवतु; इत्यादिरूपेच्छा तत्र तत्रोहनीया॥ ४-यदुक्तम्—

यस्मिन्नर्थे विधीयन्ते त्यादितव्यादितद्धिताः।
समासो वा भवेद्यत्र स उक्तः प्रथमा ततः॥

५-अपादानसम्प्रदानाधिकरणत्वरूपेणाविवक्षितं कर्मत्वेन विवक्षितं कारकं कर्मसंज्ञमित्यर्थः॥ ६-ननु हस्तं निदधाति वृक्ष इत्यत्रापि कर्मत्वविवक्षाप्रसङ्ग इत्यत आह दुहित्यादि—दुहादीनां नीप्रभृतीनाञ्च धातूनां यत्कर्म तत्सम्बन्धी योऽर्थस्तत्रापादानत्वाद्यविवक्षायां कर्मत्वविवक्षायामेव कर्मसंज्ञा नान्यत्र, अत्राविवक्षा द्विधा अपादानत्वादिप्राप्तिपूर्विका सर्वथा तदप्राप्तिरूपा च, तत्र 'दुह् दण्ड् चिञ् जि

कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्॥ १॥

गां दोग्धि पयः। बलिं याचते वसुधाम्। तण्डुलानोदनं पचति। गर्गान् शतं दण्डयति। व्रजमवरुणद्धि गाम्। माणवकं पन्थानं पृच्छति। वृक्षमवचिनोति फलानि। माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा। शतं जयति देवदत्तम्। सुधां क्षीर[1]निधिं मथ्नाति। देवदत्तं शतं मुष्णाति। ग्राममजां नयति हरति कर्षति वहति वा। [2]अर्थनिबन्धनेयं संज्ञा। बलिं भिक्षते वसुधाम्। माणवकं धर्मं भाषते अभिधत्ते वक्तीत्यादि॥

इति द्वितीया।

स्वतन्त्रः कर्ता १। ४। ५४॥

क्रि[3]यायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थः कर्ता स्यात्॥

साधकतमं करणम् १। ४। ४२॥

क्रियासिद्धौ [4]प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात्॥

कर्तृकरणयोस्तृतीया २। ३। १८॥

अनभिहिते कर्तरि करणे च तृतीया स्यात्। रामेण बाणेन हतो वाली॥

इति तृतीया।

मथ् मुष्' एषु अपादानत्वाविवक्षायां कर्मत्वविवक्षायाञ्च कर्मत्वे द्वितीया, तेष्वपादानत्वविक्षायां पञ्चम्यपि। 'रुध्' धातुप्रयोगेऽधिकरणत्वाविवक्षायां कर्मत्वे द्वितीया, अधिकरणत्वविक्षायां च सप्तमी। 'ब्रू, शासु' इत्यनयोः प्रयोगे सम्प्रदानत्वाविवक्षायां कर्मत्वे द्वितीया। अन्यत्र सर्वत्राप्राप्तिरूपैवाविवक्षा, तेषु च सर्वथा कर्मसंज्ञैवेष्टेति भावः। अत्र सूत्रोदाहरणेऽपादानत्वाद्यविवक्षया यत्कर्मत्वं तद् गौणकर्मत्वेन व्यवह्रियते॥

१-अत्र क्षीरनिधेर्गौणकर्मत्वं मथ्नातेरालोडनपूर्वकनिःसारणार्थत्वात्। अत एव 'देवासुरैरमृतमम्बुनिधिर्ममन्थे' इति भारविप्रयोगः संगच्छते॥ २-दुहादीनां धातूनां येऽर्थास्तद्वाचकधातुमात्रनिमित्तकेयं संज्ञेत्यर्थः॥ ३-पाकादिरूपायां क्रियायां यः पदार्थः स्वातन्त्र्येण वक्त्रा विवक्षितः, विवक्षा च 'इयं क्रिया अनेनैव साधनीया' इति रूपेण, तदानीं स पदार्थः कर्तृसंज्ञः। अतएव 'स्थाली पचति, अग्निः पचति' इत्यादि प्रयोगा भवन्ति॥ ४-यद्व्यापाराव्यवधानेन क्रियाफलनिष्पत्तिः तत्प्रकृष्टम्। सर्वाणि कारकाणि यद्यपि क्रियोपकारकाणि तथापीदमतिशयेन क्रियोपकारकमतस्तमप्प्रयोगः संगच्छते। सकृदनेकेषामतिशयेनोपकारकत्वाभावादेकस्यैवैकस्मिन् वाक्ये करणसंज्ञा इति सम्प्रदायः॥

Scanned with CamScanner

कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् १। ४। ३२॥

दानस्य[1] कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानसंज्ञः स्यात्॥

चतुर्थी सम्प्रदाने २। ३। १३॥

विप्राय गां ददाति॥

नमस्स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च २। ३। १६॥

एभिर्योगे चतुर्थी। हरये नमः। प्रजाभ्यः स्वस्ति। अग्नये स्वाहा। पितृभ्यः स्वधा। अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम्। तेन दैत्येभ्यो हरिरलं प्रभुः समर्थः शक्त इत्यादि॥

इति चतुर्थी।

ध्रुवमपायेऽपादानम् १। ४। २४॥

अपायो विश्लेषस्[2]तस्मिन्साध्ये यद् ध्रुवमवधिभूतं कारकं तदपादानं स्यात्॥

अपादाने पञ्चमी २। ३। २८॥

ग्रामादायाति। धावतोऽश्वात्पततीत्यादि॥

इति पञ्चमी।

षष्ठी शेषे २। ३। ५०॥

कारकप्रातिपदिकार्थव्यतिरिक्तः स्वस्वामिभावादिः सम्बन्धः शेषस्तत्र षष्ठी। राज्ञः पुरुषः। कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायां षष्ठ्येव। सतां गतम्। सर्पिषो जानीते। मातुः स्मरति। एधो दकस्योपस्कुरुते। भजे शम्भोश्चरणयोः॥

इति षष्ठी।

१-इदमुपलक्षणम्, तथा च कर्ता क्रियामात्रस्य कर्मणा सह सम्बन्धुं यं पदार्थमभिप्रैति स सम्बन्धोद्देश्यः सम्प्रदानसंज्ञः। अत एव विप्राय गां ददाति इतिवत् 'चैत्रो मैत्राय वार्तां कथयति, तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय, तुभ्यं हितमुपदिशामि' इत्यादि प्रयोगाः संगच्छन्ते॥ २-विश्लेषो विभागानुकूलव्यापारस्तस्मिन् साध्ये जननीये यद्ध्रुवमुदासीनं तादृशव्यापारानाश्रयं तदपादानसंज्ञम्। एवञ्च विभागजनकव्यापारानाश्रयत्वे सति विभागाश्रयत्वमपादानत्वम्॥

Scanned with CamScanner

आधारोऽधिकरणम् १। ४। ४५॥

[1]कर्तृकर्मद्वारा तन्निष्ठक्रियाया आधारः कारकमधिकरणं स्यात्॥

सप्तम्यधिकरणे च २। ३। ३६॥

अधिकरणे सप्तमी स्यात्, चकाराद्दूरान्तिकार्थेभ्यः। औपश्लेषिको वैषयिकोऽभिव्यापकश्चेत्याधारस्त्रिधा। कटे आस्ते[2]। स्थाल्यां[3] पचति। मोक्षे[4] इच्छास्ति। सर्वस्मिन्[5]नात्मास्ति। वनस्य दूरे अन्तिके वा॥

इति सप्तमी॥

[6]इति विभक्त्यर्थाः॥

१-साक्षाद्व्यापाररूपक्रियाया आधारः कर्ता, फलरूपाया आधारः कर्म, ताभ्यां बाधात् परम्परया क्रियाधारस्यैतत्संज्ञा। तथा हि 'कटे आस्ते' इत्यत्र कर्ता चैत्रादिस्तन्निष्ठास्तिक्रियायाः परम्परयाधारस्य कटस्याधिकरणसंज्ञा। एवम् 'स्थाल्यां पचति' इत्यत्र साक्षाद् विक्लित्तेराधारस्तण्डुलस्तदाधारः स्थाली परम्परया विक्लित्तेरप्याधारः। एवं सर्वत्रोहनीयम्॥ २-आसनक्रियाकर्तृद्वारा आसनक्रियाया आधारः कटोऽधिकरणसंज्ञः॥ ३-पाकक्रियाकर्मतण्डुलादिद्वारा पाकक्रियाया आधारः स्थाली अधिकरणसंज्ञा॥ ४-अस्तिक्रियाकर्तृभूतेच्छाद्वारा अस्तिक्रियाया आधारो मोक्षोऽधिकरणसंज्ञः॥ ५-अस्तिक्रियाकर्तृभूतात्मद्वारा अस्तिक्रियाया आधारः सर्वमधिकरणसंज्ञम्॥ ६-सर्वासां विभक्तीनामेकत्र मेलनं यथा—

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥

Scanned with CamScanner

। অথ বিভক্ত্যর্থাঃ।

৮৯১। **প্রাতিপদিকার্থলিঙ্গপরিমাণবচনমাত্রে প্রথমা —** ১।৩।৪৬

প্রাতিপদিকার্থ.......বচনমাত্রে—৭।১, প্রথমা—১।১.

বরদরাজঃ—নিয়তোপস্থিতিকঃ প্রাতিপদিকার্থঃ। মাত্রশব্দস্য প্রত্যেকং যোগঃ। প্রাতিপদিকার্থমাত্রে লিঙ্গমাত্রাদ্যাধিক্যে পরিমাণমাত্রে সংখ্যামাত্রে চ প্রথমা স্যাত্। প্রাতিপদিকার্থমাত্রে—উচ্চৈঃ। নীচৈঃ। কৃষ্ণঃ। শ্রীঃ। জ্ঞানম্। লিঙ্গমাত্রে—তটঃ, তটী, তটম্। পরিমাণমাত্রে—দ্রোণো ব্রীহিঃ। বচনং সংখ্যা। একঃ, দ্বৌ, বহবঃ।।

অনুবাদ—(প্রাতিপদিক বা নাম শ্রুত হওয়ার সংগে সংগেই) নিয়মতঃ যে অর্থের জ্ঞান হইয়া থাকে সেই অর্থই হইল প্রাতিপদিকার্থ। 'মাত্র' শব্দের সহিত প্রত্যেকের যোগ (বা সম্বন্ধ) আছে। প্রাতিপদিকার্থমাত্রের প্রতীতি হইলে, প্রাতিপদিকার্থ থাকা সত্ত্বে ও যে স্থলে লিঙ্গমাত্রের ও লিঙ্গ মাত্রের আধিক্য প্রতীয়মান হয় সেইস্থলে এবং সংখ্যামাত্র বুঝাইলে ও প্রথমা বিভক্তি হইয়া থাকে। প্রাতিপদিকার্থমাত্রের (উদাহরণ হইল)—উচ্চৈঃ। নীচৈঃ। কৃষ্ণঃ। শ্রীঃ। জ্ঞানম্। লিঙ্গমাত্রের (আধিক্যের উদাহরণ) হইল—তটঃ, তটী, তটম্। পরিমাণমাত্রের (আধিক্যের উদাহরণ) হইল—দ্রোণো ব্রীহিঃ। বচনশব্দের অর্থ সংখ্যা। (যথা-) একঃ, দ্বৌ, বহবঃ।

আলোচনা—সুবন্ত প্রকরণে যে সুপ্ প্রভৃতি প্রত্যয়ের বিধান করা হইয়াছে, তাহাদের অর্থ নির্দেশ এই প্রকরণে করা হইতেছে। তাই এই প্রক্রিয়ার নাম বিভক্ত্যর্থ প্রক্রিয়া। সুপ্ বিভক্তি সাতটি। প্রথমা, দ্বিতীয়া তৃতীয়া ইত্যাদি। প্রাতিপদিকার্থ কাহার ও কাহার ও মতে একটি, দুইটি, তিনটি, চারিটি ও পাঁচটি।

'একং দ্বিকং ত্রিকঞ্চৈব চতুষ্কং পঞ্চকং তথা।
নামার্থা ইতি সর্বেঽমী পক্ষাঃ শাস্ত্রে নিরূপিতাঃ।।

Scanned with CamScanner

অর্থাৎ প্রাতিপদিকের অর্থ-জাতি কিংবা ব্যক্তি অর্থাৎ একটি। আবার জাতিও ব্যক্তি অর্থাৎ দুইটি। আবার জাতি, ব্যক্তি ও লিঙ্গ-অর্থাৎ তিনটি। আবার জাতি ব্যক্তি, লিঙ্গ ও সংখ্যা-অর্থাৎ চারিটি। আবার জাতি ব্যক্তি, লিঙ্গ, সংখ্যা ও কারক অর্থাৎ পাচটি। কিন্তু এই গ্রন্থে সেইরূপ প্রাতিপদিকার্থ স্বীকার করা হয় নাই। নিয়তোপস্থিতিকঃ প্রাতিপদিকার্থঃ। যাহার উপস্থিতি নিয়ত তাহা প্রাতিপদিকার্থ। প্রাতিপদিকার্থমাত্রে, প্রাতিপদিকার্থ থাকা সত্ত্বেও যে স্থলে লিঙ্গমাত্রের ও পরিমাণ মাত্রের আধিক্য প্রতীয়মান হয় সেইস্থলে এবং সংখ্যামাত্র বুঝাইলে ও প্রথমা বিভক্তি হয়। যথাক্রমে উদাহরণ ও প্রদর্শিত হইয়াছে। এক শব্দের এবং তাহার উত্তর সু বিভক্তির অর্থ একত্ব হওয়ায় 'উক্তার্থানামপ্রয়োগঃ' এই নিয়ম দ্বারা সু বিভক্তির নিষেধ হইয়া যাওয়ায় বর্তমান সূত্রে 'সংখ্যা' শব্দ থাকায় তাহার বিধান হইল।

৮৯২। **সম্বোধনে চ**—২।৩।৪৭.

সম্বোধনে—৭।১, চ-অ০.

বরদরাজঃ—প্রথমা স্যাৎ। হে রাম।।

অনুবাদ—প্রথমা (বিভক্তি) হয়। (যথা-) হে রাম।

আলোচনা—সূত্রে 'চ' থাকায় পূর্ব সূত্র হইতে 'প্রথমা' পদের সমুচ্চয় হয়। সম্বোধনের আধিক্য বুঝাইলে প্রথমা বিভক্তি হয়। সম্বোধনের অর্থ হইল—অভিমুখীকৃত্য জ্ঞাপনম্'। যেমন—হে রাম।

। ইতি প্রথমা।

৮৯৩। **কর্তুরীপ্সিততমং কর্ম**—১।৪।৪৯.

কর্তুঃ—৬।১, ঈপ্সিততমম্—১।১, কর্ম—১।১.

বরদরাজঃ—কর্তুঃ ক্রিয়য়া আপ্তুমিষ্টতমং কারকং কর্মসংজ্ঞং স্যাৎ।।

অনুবাদ—কর্তা (স্বীয়) ক্রিয়ার দ্বারা যাহাকে মুখ্যভাবে পাইতে ইচ্ছা করেন (অর্থাৎ যাহা কর্তার ইষ্টতম বস্তু) তাহারই কর্ম (কারক) সংজ্ঞা হয়।

আলোচনা—কর্তার ঈপ্সিততম ইহার অর্থ হইল অত্যন্ত অভীষ্ট। 'কারকে' সূত্রের

Scanned with CamScanner

অধিকার রহিয়াছে। কর্তা স্বীয় ক্রিয়ার দ্বারা যাহার সহিত সাতিশয় সম্বন্ধ করিবার ইচ্ছা করে সেইরূপ কারক ই কর্ম।

৮৯৪। **কর্মণি দ্বিতীয়া—২।৩।২**

কর্মণি—৭।১, দ্বিতীয়া—১।১.

বরদরাজঃ—অনুক্তে কর্মণি দ্বিতীয়া স্যাত্। হরিং ভজতি। অভিহিতে তু কর্মাদৌ প্রথমা —হরিঃ সেব্যতে। লক্ষ্ম্যা সেবিতঃ।।

অনুবাদ—অনুক্ত কর্মে দ্বিতীয়া (বিভক্তি) হয়। (যথা-) হরিং ভজতি। কর্ম অভিহিত হইলে 'প্রথমা' (হয়)। (যথা-) হরিঃ সেব্যতে। লক্ষ্ম্যা সেবিতঃ।

আলোচনা—'অনভিহিতে' এই সূত্রের অধিকার রহিয়াছে। তিঙ্, কৃত্, তদ্ধিত এবং সমাসের দ্বারা কর্ম প্রভৃতি অভিহিত হইয়া থাকে। যেমন—হরিঃ সেব্যতে। এইখানে কর্মবাচ্যে তিঙ্ প্রত্যয় হইয়াছে। অর্থাৎ তিঙ্ এর দ্বারা কর্ম উক্ত হইয়াছে। পূর্বে—সঃ হরিম্ সেবতে,—এইরূপ ছিল। কৃত্ এর উদাহরণ হইল—লক্ষ্ম্যা সেবিতঃ। এইখানে ক্ত কৃত্প্রত্যয় কর্মবাচ্যে হওয়ায় কর্ম 'হরি' উক্ত হইয়াছে। 'হরি' এইখানে প্রাতিপদিকার্থে প্রথমা হইল। সম্পূর্ণ বাক্য—লক্ষ্ম্যা হরিঃ সেবিতঃ—এইরূপ।

৮৯৫। **অকথিতং চ—১।৪।৫১।**

অকথিতম্—১।১, চ-অ০.

বরদরাজঃ—অপাদানাদি বিশেষৈরবিবক্ষিতং কারকং কর্মসংজ্ঞং স্যাত্।

দুহ্যাচ্পচ্দণ্ডরুধি প্রচ্ছি চিব্রূশাসুজিমথ্মুষাম্।

কর্মযুক্ স্যাদকথিতং তথা স্যান্নীহৃকৃষ্বহাম্।।১

গাং দোগ্ধি পয়ঃ। বলিং যাচতে বসুধাম্। তণ্ডুলানোদনং পচতি। গর্গান্ শতং দণ্ডয়তি। ব্রজমবরুণদ্ধি গাম্। মাণবকং পন্থানং পৃচ্ছতি। বৃক্ষমবচিনোতি ফলানি। মাণবকং ধর্মং ব্রূতে শাস্তি বা। শতং জয়তি দেবদত্তম্। সুধাং ক্ষীরনিধিং মথ্নাতি। দেবদত্তং শতং মুষ্ণাতি। গ্রামমজাং নয়তি

Scanned with CamScanner

হরতি কর্ষতি বহতি বা। অর্থনিবন্ধনেয়ং সংজ্ঞা। বলিং ভিক্ষতে বসুধাম্। মাণবকং ধর্মং ভাষতে অভিধত্তে বক্তীত্যাদি।।

অনুবাদ—অপাদান প্রভৃতি বিশেষ রূপে যাহার বিবক্ষা করা হয় না, সেইরূপ কারকের কর্মসংজ্ঞা হইয়া থাকে। দুহ্, যাচ্, পচ্ দণ্ডি, রুধ্, প্রচ্ছ্, চি, ব্রূ, শাস্, জি, মন্থ্, মুষ্ এবং নী, হৃ, কৃষ্, বহ্—এই ধাতুগুলি কর্মের সংগে যুক্ত হইলে অকথিত হয়। (যথা)গাং দোগ্ধি পয়ঃ। বলিং যাচতে বসুধাম্। তণ্ডুলানোদনং পচতি। গর্গান্ শতং দণ্ডয়তি। ব্রজমবরুণদ্ধি গাম্। মাণবকং পন্থানং পৃচ্ছতি। বৃক্ষমবচিনোতি ফলানি। মাণবকং ধর্মং ব্রূতে শাস্তি বা। শতং জয়তি দেবদত্তম্। সুধাং ক্ষীরনিধিং মথ্নাতি। দেবদত্তং শতং মুষ্ণাতি। গ্রামমজাং নয়তি হরতি কর্ষতি বহতি বা। সংজ্ঞাটি হইল অর্থ নিবন্ধনা (অর্থাৎ অর্থাশ্রয়া)। মাণবকং ধর্মং ভাষতে অভিধত্তে বক্তি—ইত্যাদি।

আলোচনা—অকথিত শব্দের অর্থ এইখানে অবিবক্ষিত বা যাহা বলা অভিপ্রেত নহে। অপাদান, সম্প্রদান প্রভৃতি কারকের এক একটি বিশেষ নাম, সেই বিশেষ নাম ধরিয়া যদি ইহাদিগকে ডাকিতে ইচ্ছা না হয় তাহা হইলে ইহাদের (অপাদানাদির) কর্ম সংজ্ঞা হয়। যে যে ধাতুর প্রয়োগে অপাদানাদির কর্মসংজ্ঞা হয় তাহা 'দুহ্যাচ্—' ইত্যাদি কারিকায় বলা হইয়াছে। দুহাদি হইল দ্বাদশটি, এবং ন্যাদি হইল চারিটি। মোট ষোড়শটি অকথিত (গৌণ) ও কথিত (মুখ্য) কর্ম বিশিষ্টধাতু। তবে ইহাদের অর্থ প্রকাশ করে এমন অন্য ধাতু ও দ্বিকর্মক হইতে পারে গোঃ দোগ্ধি পয়ঃ—গাং দোগ্ধি পয়ঃ। বলেঃ বসুধাং যাচতে—বলিং যাচতে বসুধাম্। তণ্ডুলৈঃ ওদনং পচতি—তণ্ডুলান্ ওদনং পচতি। গর্গেভ্যঃ শতং দণ্ডয়তি—গর্গান্ শতং দণ্ডয়তি। ব্রজে অবরুণদ্ধি গাম্-ব্রজম্ অবরুণদ্ধি গাম্। মাণবকেন পন্থানং পৃচ্ছতি—মাণবকং পন্থানং পৃচ্ছতি। বৃক্ষাত্ অবচিনোতি ফলানি—বৃক্ষমবচিনোতি ফলানি। মাণবকায় ধর্মং ব্রূতে শাস্তি বা—মাণবকং ধর্মং ব্রূতে শাস্তি বা। শতং জয়তি দেবদত্তায়—শতং জয়তি বা দেবদত্তম্। সুধাং ক্ষীরনিধেঃ মথ্নাতি—সুধাং ক্ষীরনিধিং মথ্নাতি। দেবদত্তাত্ শতং মুষ্ণাতি—দেবদত্তং শতং মুষ্ণাতি। গ্রামে অজাং নয়তি, হরতি, কর্ষতি বহতি বা—গ্রামমজাং নয়তি, হরতি, কর্ষতি, বহতি বা। এই ষোলটি ধাতুর অর্থে বিদ্যমান

Scanned with CamScanner

ধাতুর যোগে অবিবক্ষিত কারকের কর্ম সংজ্ঞা হয়। যথা—বলেঃ ভিক্ষতে বসুধাম্—বলিং ভিক্ষতে বসুধাম্। মাণবকায় ধর্মং ভাষতে, অভিধত্তে, বক্তি বা। এইরূপে অন্যত্রও।

।। ইতি দ্বিতীয়া।।

৮৯৬। **স্বতন্ত্রঃ কর্তা—১।৪।৫৪.**

স্বতন্ত্রঃ—১।১, কর্তা—১।১.

বরদরাজঃ—ক্রিয়ায়াং স্বাতন্ত্র্যেণ বিবক্ষিতোঽর্থঃ কর্তা স্যাত্।।

অনুবাদ—ক্রিয়ার স্বতন্ত্র বা স্বাধীনভাবে বিবক্ষিত বিষয়ের (কারকের) কর্তৃসংজ্ঞা হয়।

আলোচনা—সূত্রে স্বতন্ত্র শব্দটি স্বাতন্ত্র্যে প্রযুক্ত হইয়াছে। বক্তা যাহাকে স্বতন্ত্র বলিয়া মনে করে তাহারই কর্তৃসংজ্ঞা হয়। বাক্যে কোনটির বাস্তব স্বাতন্ত্র্য আবার কোনটির বা বিবক্ষিত স্বাতন্ত্র্য থাকে। যেমন-রামঃ পচতি —বাক্যে রামে বাস্তব স্বাতন্ত্র্য। কিন্তু কাষ্ঠং পচতি—বাক্যে কাষ্ঠ বিবক্ষিত স্বাতন্ত্র্য।

৮৯৭। **সাধকতমং করণম্—১।৪।৪২.**

সাধকতমম্—১।১, করণম্—১।১.

বরদরাজঃ—ক্রিয়াসিদ্ধৌ প্রকৃষ্টোপকারকং করণসংজ্ঞং স্যাত্।।

অনুবাদ—ক্রিয়াসিদ্ধিতে যাহা প্রকৃষ্ট উপকারক তাহার করণসংজ্ঞা হয়।

আলোচনা—যাহার ব্যাপারের অনন্তরই ক্রিয়ার নিষ্পত্তি হইয়া থাকে, তাহা প্রকৃষ্ট, এইরূপ প্রকৃষ্ট উপকারকের করণ সংজ্ঞা হয়। অন্যান্য কারক ক্রিয়া-সিদ্ধির উপকারক হইলে ও অত্যন্ত উপকারক নহে।

৮৯৮। **কর্তৃকরণয়ো-স্তৃতীয়া—২।৩।১৮.**

কর্তৃকরণয়োঃ—৭।২, তৃতীয়া—১।১.

বরদরাজঃ—অনভিহিতে কর্তরি করণে চ তৃতীয়া স্যাত্। রামেণ বাণেন হতো বালী।।

Scanned with CamScanner

অনুবাদ—অনুক্ত কর্তায় ও অনুক্ত করণে তৃতীয়া বিভক্তি হয়। (যথা-) রামেণ বাণেন হতো বালী।

আলোচনা—'অনভিহিতে' এই সূত্রের অধিকার রহিয়াছে। অনভিহিত ইহার অর্থ অনুক্ত। কর্ত্তা ও করণ যদি পূর্বোক্ত তিঙ্, কৃত্, তদ্ধিত এবং সমাসের দ্বারা উক্ত না হয় তাহা হইলে উহাতে তৃতীয়া বিভক্তি হয়। যেমন—রামেণ বাণেন হতো বালী—এই উদাহরণে 'হতঃ' এই পদে কর্ম অর্থে 'ক্ত' প্রত্যয় হইয়াছে। ফলে 'স্বতন্ত্রঃ কর্তা' সূত্র দ্বারা 'রাম' শব্দের এবং 'সাধকতমং করণম্' সূত্র দ্বারা 'বাণ' শব্দের করণ সংজ্ঞা হওয়ায় এবং ঐ দুইটি ক্রিয়াপদে উক্ত না হওয়ায় উহাদের উত্তর 'কর্তৃকরণয়োস্তৃতীয়া' সূত্র দ্বারা তৃতীয়া বিভক্তি হইল।

। ইতি তৃতীয়া।

৯৯৯। **কর্মণা যমভিপ্রৈতি স সম্প্রদানম্—১।৪।৩২**

কর্মণা—৩।১, যম্—২।১, অভিপ্রৈতিতিঙন্তংপদম্, সঃ —১।১, সম্প্রদানম্—১।১.

বরদরাজঃ—দানস্য কর্মণা যমভিপ্রৈতি স সম্প্রদানসংজ্ঞঃ স্যাত্।।

অনুবাদ—(কর্তা) দানার্থক (ক্রিয়ার) কর্মের সহিত যাহার সম্বন্ধ করিতে ইচ্ছা করে তাহার সম্প্রদান সংজ্ঞা হইয়া থাকে।

আলোচনা—'অভিপ্রৈতি' ইহার অর্থ 'সম্বদ্ধুমিচ্ছতি'। এইসূত্রে 'কর্মণা' পদে করণে তৃতীয়া বিভক্তি হইয়াছে। 'কারকে' সূত্রের অধিকার রহিয়াছে।

৯০০। **চতুর্থী সম্প্রদানে—২।৩।১৩**

চতুর্থী—১।১, সম্প্রদানে—৭।১

বরদরাজঃ—বিপ্রায় গাং দদাতি।।

অনুবাদ—বিপ্রায় গাং দদাতি।

আলোচনা—'অনভিহিতে' সূত্রের অধিকার রহিয়াছে। 'বিপ্রায় গাং দদাতি'— এই স্থলে

Scanned with CamScanner

দানক্রিয়ার কর্ম যে গো রূপ দ্রব্য উহার বিপ্রের সহিত সম্বন্ধ করিবার ইচ্ছা থাকায় বিপ্র হইল সম্বন্ধিরূপে ইচ্ছার বিষয় বা উদ্দেশ্য, সেইজন্য উহাতে সম্প্রদান সংজ্ঞা হইয়া থাকে। এবং 'চতুর্থী সম্প্রদানে' সূত্র দ্বারা অনভিহিত সম্প্রদানে চতুর্থী বিভক্তি হইল।

৯০১। **নমস্স্বস্তিস্বাহাস্বধালংবষড়্যোগাচ—২।৩।১৬**

নমস্স্বস্তি.......যোগাত্—৫।১, চ—অ.

বরদরাজঃ—এভির্যোগে চতুর্থী। হরয়ে নমঃ। প্রজাভ্যঃ স্বস্তি। অগ্নয়ে স্বাহা। পিতৃভ্যঃ স্বধা। অলমিতি পর্যাপ্ত্যর্থগ্রহণম্। তেন দৈত্যেভ্যো হরিরলং প্রভুঃ সমর্থঃ শক্ত ইত্যাদি।

অনুবাদ— (নমস্, স্বস্তি, স্বাহা, স্বধা, অলম্, বষট্) ইহাদের যোগে চতুর্থী (বিভক্তি হয়)। (যথা-) হরয়ে নমঃ। প্রজাভ্যঃ স্বস্তি। অগ্নয়ে স্বাহা। পিতৃভ্যঃ স্বধা। অলম্ এই পদের দ্বারা পর্যাপ্তি (সমর্থ) বাচক শব্দের গ্রহণ করা হয়। সেইজন্য দৈত্যেভ্যো হরিরলং প্রভুঃ, সমর্থঃ, শক্তঃ ইত্যাদি প্রয়োগ সিদ্ধ হয়।

আলোচনা— 'অলমিতি পর্যাপ্ত্যর্থগ্রহণম্' ইহা একটি বার্ত্তিক। এই শব্দটি পর্যাপ্তি বা সামর্থ্য অর্থের বাচক। হরয়ে নমঃ—হরিকে নমস্কার। প্রজাভ্যঃ স্বস্তি—প্রজাদিগের কল্যাণ (হউক)। পিতৃভ্যঃ স্বধা—পিতৃগণের তৃপ্তি (হউক)। দৈত্যেভ্যো হরিরলং প্রভুঃ সমর্থঃ শক্তঃ।।

। ইতি চতুর্থী।

৯০২। **ধ্রুবমপায়েঽপাদানম্—১।৪।২৪**

ধ্রুবম্—১।১, অপায়ে—৭।১, অপাদানম্—১।১

বরদরাজঃ—অপায়ো বিশ্লেষস্তস্মিন্ সাধ্যে যদ্ ধ্রুবমবধিভূতং কারকং তদপাদানং স্যাত্।।

অনুবাদ—অপায়ের অর্থ বিভাগ, উহার হেতু যে ক্রিয়া সেই ক্রিয়ার অবধি স্বরূপ কারকের অপাদান সংজ্ঞা হয়।

Scanned with CamScanner

আলোচনা—'কারকে' সূত্রের অধিকার রহিয়াছে। ধ্রুব শব্দের অর্থ স্থির। অপায়ের অর্থ বিভাগ ও বিভাগের জনকরূপ ক্রিয়া। বিভাগ হইলে যাহা ধ্রুব তাহার অপাদান কারক হয়।

৯০৪। **অপাদানে পঞ্চমী—২।৩।২৮**

অপাদানে—৭।১, পঞ্চমী—১।১

বরদরাজঃ—গ্রামাদায়াতি। ধাবতোঽশ্বাত্পততীত্যাদি।।

অনুবাদ—(যথা-) গ্রামাদ্ আয়াতি। ধাবতোঽশ্বাৎ পততি—ইত্যাদি।

আলোচনা—'অনভিহিতে' সূত্রের অধিকার রহিয়াছে। অপাদান অর্থ অনুক্ত হইলে যাহা অপাদান সংজ্ঞক তাহার উত্তর পঞ্চমী বিভক্তি হয়। যেমন—গ্রামাত্ আয়াতি—এই উদাহরণে গ্রামাত্ অপাদান কারকে পঞ্চমী হইল। ধাবতঃ অশ্বাত্ পততি—এই বাক্যে ধাবন ক্রিয়া বিশিষ্ট অশ্ব হইতে পতন সম্ভব হইতেছে। বিভাগের আশ্রয় অশ্ব, অশ্ব হইতে দেব দত্তের বিভাগ হওয়ায় জনক ধাবন ক্রিয়া নয়, কিন্তু পতন ক্রিয়াই উহার হেতু। ফলে উক্ত বাক্যদ্বয়ে গ্রাম ও অশ্ব অপাদান হওয়ায় তাহার উত্তর পঞ্চমী বিভক্তি হইল।

। ইতি পঞ্চমী।

৯০৪। **ষষ্ঠী শেষে—২।৩।৫০**

ষষ্ঠী—১।১, শেষে—৭।১

বরদরাজঃ—কারকপ্রাতিপদিকার্থব্যতিরিক্তঃ স্বস্বামিভাবাদিঃ সম্বন্ধঃ শেষস্তত্র ষষ্ঠী। রাজ্ঞঃ পুরুষঃ। কর্মাদীনামপি সম্বন্ধমাত্রবিবক্ষায়াং ষষ্ঠ্যেব। সতাং গতম্। সর্পিষো জানীতে। মাতুঃ স্মরতি। এধো দকস্যোপস্কুরুতে। ভজে শম্ভোশ্চরণয়োঃ।।

অনুবাদ—যাহা কারক, প্রাতিপদিকার্থ নয়, তাহা হইল শেষ—স্বস্বামিভাবাদিভাব

Scanned with CamScanner

প্রভৃতি সম্বন্ধ তাহাতে ষষ্ঠী বিভক্তি হয়। (যথা-) রাজ্ঞঃ পুরুষঃ। কর্ম প্রভৃতির সম্বন্ধ মাত্র রূপে বিবক্ষা করিলে ষষ্ঠী বিভক্তিই হইয়া থাকে। সতাং গতম্। সর্পিযো জানীতে। মাতুঃ স্মরতি। এধো দকস্যোপস্কুরুতে। ভজে শম্ভোশ্চরণয়োঃ।

আলোচনা—'শেষে' শব্দের অর্থ হইল যাহা বলা হইয়াছে তাহার অতিরিক্ত। অষ্টাধ্যায়ীতে অপাদান, সম্প্রদান, করণ, অধিকরণ ও কর্ম অর্থে যথাক্রমে পঞ্চমী, চতুর্থী, তৃতীয়া সপ্তমী ও দ্বিতীয়া বিভক্তি বিহিত হইয়াছে। কর্তায় ও তৃতীয়া হয়। সর্বশেষে প্রাতিপদিকার্থে প্রথমা বিহিত হইয়াছে। এইগুলি বাদে শেষ। রাজ্ঞঃ পুরুষঃ—সম্বন্ধে ষষ্ঠী বিভক্তি হইল। কর্ম প্রভৃতির সম্বন্ধমাত্র বিবক্ষায় ষষ্ঠী হইবে। যেমন—'সতাং গতম্' (সৎ পুরুষের গমন)। 'সর্পিযো জানীতে'—ইত্যাদি স্থলে করণের সম্বন্ধ সামান্য রূপে বিবক্ষার ফলে ষষ্ঠী হইয়াছে। (দেবদত্ত) মাতুঃ স্মরতি। এই বাক্যে—দেবদত্ত কর্তৃক মাতৃসম্বন্ধি স্মরণ—এইরূপে কর্মের সম্বন্ধ সামান্য রূপে বিবক্ষার ফলে সম্বন্ধে ষষ্ঠী হইয়াছে। এধো দকস্যোপস্কুরুতে—এই বাক্যের অর্থ হইল—কাষ্ঠ কর্তৃক জলসম্বন্ধী উপস্কার অর্থাৎ গুণাধান। এইখানে সম্বন্ধ সামান্যরূপে বোধ করাইবার ইচ্ছায় কর্মে দ্বিতীয়ার স্থানে ষষ্ঠী বিভক্তি হইয়াছে। এধস্=কাষ্ঠ। দক=জল। 'ভজে শম্ভোশ্চরণয়োঃ' শম্ভুর চরণ দুইটির ভজনা করি। এইস্থলে কর্মত্বের শেষত্ব বিবক্ষা করিয়া সম্বন্ধসামান্যে ষষ্ঠী বিভক্তি হইয়াছে।

। ইতি ষষ্ঠী।

৯০৫। **আধারোঽধিকরণম্—১।৪।৪৫**

আধারঃ—১।১, অধিকরণম্—১।১

বরদরাজঃ—কর্তৃকর্মদ্বারা তন্নিষ্ঠক্রিয়ায়া আধারঃ কারকমধিকরণং স্যাত্।

অনুবাদ—কর্তা ও কর্মের দ্বারা তদাশ্রিত ক্রিয়ার আধারের কারক সংজ্ঞা হইয়া অধিকরণ সংজ্ঞা হয়।

আলোচনা—'কারকে' এই সূত্রের অধিকার রহিয়াছে। আধ্রিয়তে অস্মিন্ ইতি আধারঃ। যাহাতে ক্রিয়া আশ্রিত হয় তাহা আধার। সাধারণতঃ ক্রিয়ার আধারের অধিকরণ সংজ্ঞা হয়। সাক্ষাত্ ভাবে ক্রিয়ার আধার বা আশ্রয় বুঝাইলে কর্তৃসংজ্ঞা ও কর্মসংজ্ঞা হইয়া থাকে। কিন্তু পরম্পরারূপে

Scanned with CamScanner

অর্থাৎ কর্তার ও কর্মের ধারণের দ্বারা উহাদের আশ্রিত ক্রিয়ার ও আধার বুঝাইলে উহাদের অধিকরণ সংজ্ঞা হইবে।

৯০৬। **সপ্তম্যধিকরণে চ—২।৩।৩৬**

সপ্তমী—১।১, অধিকরণে—৭।১, চ-অ০

বরদরাজঃ—অধিকরণে সপ্তমী স্যাত্, চকারাদ্দূরান্তিকার্থেভ্যঃ। ঔপশ্লেষিকো বৈষয়িকোঽভিব্যাপকশ্চেত্যাধারস্ত্রিধা। কটে আস্তে। স্থাল্যাং পচতি। মোক্ষে ইচ্ছাস্তি। সর্বস্মিন্নাত্মাস্তি। বনস্য দূরে অন্তিকে বা।।

অনুবাদ—অধিকরণে সপ্তমী বিভক্তি হয়। (সূত্রস্থ) চকারের দ্বারা 'দূরান্তিকার্থেভ্যঃ' (সূত্রের দ্বারা দূর ও অন্তিক শব্দের উত্তর সপ্তমী বিভক্তি হয়)। আধার তিন প্রকার—ঔপশ্লেষিক, বৈষয়িকও অভিব্যাপক। কটে আস্তে (মাদুরে স্থিত আছে)। স্থাল্যাং পচতি (হাঁড়িতে পাক করিতেছে)। মোক্ষে ইচ্ছাস্তি (মোক্ষে ইচ্ছা আছে)। সর্বস্মিন্ আত্মাস্তি (সকলের মধ্যে আত্মা আছে)। বনস্য দূরে অন্তিকে বা (বনের দূরে অথবা নিকটে)।

আলোচনা—'অনভিহিতে' সূত্রের অধিকার রহিয়াছে। তিঙ্ প্রভৃতির দ্বারা অধিকরণ অর্থ উক্ত না হইলে সেই অধিকরণ সংজ্ঞক শব্দের উত্তর সপ্তমী হইবে। 'দূরান্তিকার্থেভ্যঃ—' ইহা ঠিক পূর্ববর্ত্তী সূত্র। বর্তমান সূত্রে 'চ'-কার থাকায় ঐসম্পূর্ণ সূত্রটির অনুবর্তন হইল। ফলে অর্থ হইল---অধিকরণ কারকে দূরার্থক ও অন্তিকার্থক শব্দে সপ্তমী সহ পূর্বোক্ত তিনটি বিভক্তিই হইয়া থাকে। ঔপশ্লেষিক অধিকরণের উদাহরণ হইল—কটে আস্তে। স্থাল্যাং পচতি। বৈষয়িক অধিকরণ—মোক্ষে ইচ্ছাস্তি (মোক্ষ বিষয়ে)। অভিব্যাপক অধিকরণ—সর্বস্মিন্ আত্মা অস্তি। দূর ও অন্তিক শব্দের উত্তর ও অধিকরণে সপ্তমী—বনস্য দূরে অন্তিকে বা। এই উদাহরণে দূর ও অন্তিক শব্দের উত্তর অধিকরণে সপ্তমী হইল।

। ইতি সপ্তমী ।

।। ইতি বিভক্ত্যর্থাঃ ।।

Scanned with CamScanner